भारत–आसियान बहुपक्षीय व्यापार के राजनैतिक आयाम

डॉ. बैद्यनाथ राम*

सार–संक्षेप–बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली विश्व के समस्त देशों के उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करती है। इसमें एक विश्व बाजार विद्यमान रहता है, जिसमें स्वतंत्र प्रतियोगिता होती है। इससे वस्तुओं के मूल्य कम रहते हैं, जिससे उपभोक्ताओं का शोषण नहीं हो पाता। साथ ही, एक ही देश के उपभोक्ता अनेक देशों की वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं। इस प्रणाली में आर्थिक रूप से शक्तिशाली देश कमजोर देशों का शोषण नहीं कर सकते तथा बड़ी संख्या में देशों के बीच आर्थिक सहयोग में वृद्धि होती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से पूर्ण लाभ उसी समय उठाया जा सकता है जब 'श्रम–विभाजन एवं विशिष्टीकरण' का पूर्ण प्रयोग किया जाय। यह प्रयोग तभी सम्भव है जब व्यापार पैमाने पर सापेक्षिक रूप से अधिक देशों के साथ व्यापार किया जाय। यह बहुपक्षीय व्यापार द्वारा ही सम्भव होता है।

परिचय–बहुपक्षीय व्यापार के अन्तर्गत विदेशी व्यापार का विकास स्वतंत्र रूप से हो सकता है, जिसके फलस्वरूप आर्थिक विकास में गति आती है। इसके अतिरिक्त बहुपक्षीय व्यापार में अनेक देश शामिल होते हैं। अतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्बन्धी समस्याओं को समझौते के आधार पर सरलता से हल किया जा सकता है और सम्बन्धित कानून भी बनाकर हल किया जा सकता है। इस समझौतों की अवधि दीर्घ होती है तथा व्यापार सम्बन्धी जिन नीतियों का निर्माण किया जाता है वे स्थायी प्रकृति के होते हैं।

किसी देश में बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली को विकसित करने के दो प्रमुख आधार हैं– 1. विभिन्न देशों का असमान औद्योगिक एवं आर्थिक विकास तथा 2. पिछड़े देशों में विकसित देशों द्वारा पूँजी का निवेश। इस प्रणाली में एक देश किसी विशिष्ट देश के साथ व्यापार करने को बाध्य नहीं होता बल्कि मुक्त रूप से वह किसी भी देश अथवा क्षेत्रीय संगठनों में एक सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र विश्व के विभिन्न राष्ट्रों अथवा क्षेत्रीय संगठनों अथवा क्षेत्रीय गुटों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के समझौते करता है। ये समझौते कई देशों के साथ किये जाते हैं और उन्हें एक साथ लागू किया जाता है। ये समझौते स्वतंत्र व्यापार के अभाव में किसी देश के व्यापार को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

***द्वारा–मुनेश्वर राम, ग्राम+पो.–कबीरचक, थाना–सदर, जिला– दरभंगा,**

बहुपक्षीय व्यापार में विश्व के सभी वस्तुओं का समान मूल्यांकन होता है तथा सभी देशों में प्रचलित मुद्राओं का एक ही आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। यह भी सत्य है कि बहुपक्षीय व्यापार समझौते अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ाने में सहायक एवं लाभप्रद होते हैं। शोध–प्रबंध के इस अध्याय में भारत का आसियान देशों के साथ बहुपक्षीय व्यापार प्रवृत्तियों की विस्तृत व्याख्या की गयी है।

पिछले लगभग 50 वर्षों में भारत में आयात–निर्यात एवं व्यापारिक सन्तुलन की स्थिति पर गौर करें तो यह स्पष्ट है कि भारत के आयात–निर्यात दोनों में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष 1950–51में भारत का निर्यात जहाँ सिर्फ 606 करोड़ रू0 था। वहीं वर्ष 1970–71, 1990–91 एवं 2000–2001 में बढ़कर क्रमशः 1535 करोड़ रू0, 32553 करोड़ रू0 एवं 20371 करोड़ रू0 हो गया जबकि पिछले 5–6 वर्षों में निर्यात की प्रगति पर गौर करें तो वर्ष 2010–11, 2011–12 एवं 2012–13 में भारत का निर्यात क्रमशः 456418 करोड़ रू0, 571779 करोड़ रू0 एवं 655864 करोड़ रू0 हो गया था, जोकि बढ़कर 2015–16 में 1142649 करोड़ रू0 हो गया। इस वर्ष निर्यात में प्रगति लगभग 35.1 प्रतिशत रही।

इसी प्रकार भारत के आयात की स्थिति पर गौर करें तो भारत का आयात भी लगातार बढ़ा है और आयात में वृद्धि दर निर्यात में वृद्धि की दर से अधिक रही है। वर्ष 1960–61 में भारत का आयात जहाँ 1122 करोड़ रू0 था वह बढ़कर वर्ष 1970–71, 1990–91 एवं 2000–2001 में क्रमशः 1634 करोड़ रू0, 43198 करोड़ रू0 एवं 230873 करोड़ रू0 हो गया। पिछले 5–6 वर्षों में भारत के आयात की स्थिति पर गौर करें तो वर्ष 2014–15 को छोड़कर शेष अन्य सभी वर्षों में आयात में तीव्र वृद्धि हुई है।

वर्ष 2010–11 में भारत का आयात जहाँ 660409 करोड़ रू0 था वह वर्ष 2015–16 में बढ़कर 1683467 करोड़ रू0 हो गया। इस वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि दर लगभग 23.5 प्रतिशत की रही। भारत का व्यापार–सन्तुलन हमेशा भारत के विपरीत रहा है, इसका मुख्य कारण पेट्रोलियम पदार्थों के आयात में तीव्र वृद्धि होना है। सिर्फ 1976–77 ही एक ऐसा वर्ष रहा है, जिसमें भारत का व्यापार–सन्तुलन रू0 58 करोड़ के आधिक्य के साथ भारत के पक्ष में रहा है। इस वर्ष निर्यात में तो 27.4 प्रतिशत की तीव्र वृद्धि दर्ज की गयी थी परन्तु आयात में निर्यात की तुलना में वृद्धि नकारात्मक थी। सम्भवतः यही एक ऐसा कारण रहा होगा जिसके कारण इस वर्ष भारत का व्यापार–सन्तुलन भारत के पक्ष में रहा था, जो कि भारत के विदेश व्यापार परिदृश्य में एक अपवाद की स्थिति है।

भारत–आसियान के बहुपक्षीय विदेश व्यापार का विश्लेषणः–भारत का विदेश व्यापार स्वतंत्रता के उपरान्त कृषि उपजों एवं तद्जनित उत्पादों पर निर्भर था।

ऐसा इसलिए कि औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था को आयोतोन्मुख बनाया गया। पश्चिमी देशों का औद्योगिक निर्मित माल भारत में बेचा जाता था। इसके प्रतिफल में भारत से कृषि उपजों तथा खनिज पदार्थों का निर्यात किया जाता था। कमोवेश यही स्थिति स्वतंत्रता के बाद भी बनी रही। देश की जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत भाग कृषि एवं उससे संबंधित कार्यों में लगा रहा। पूँजी निवेश के अभाव में स्वतंत्रता के पश्चात् देश में बड़े उद्योगों की स्थापना नहीं की जा सकी। विगत में 'सोने की चिड़िया' की संज्ञा से अभिहित भारत औपनिवेशिक शासन के दौरान किए गए आर्थिक शोषण के फलस्वरूप एक निर्धन देश बन गया। फलस्वरूप विकास की रतार पकड़ने में भारत पिछड़ गया और विश्व व्यापार में अपेक्षित हिस्सेदारी प्राप्त नहीं कर सका।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में औद्योगिक विकास मंद गति से आगे बढ़ा, क्योंकि निवेश इसमें एक बड़ी समस्या थी। प्रमुख उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्र को वरीयता प्राप्त थी, क्योंकि इस लोकतांत्रिक देश की सरकारों को यह आशंका थी कि यदि निजी क्षेत्र देश में प्रमुखता हासिल कर लेगा, तो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी, फलस्वरूप सामाजिक सुरक्षा के सरोकार पीछे छूट जाएँगे और देश में आर्थिक विषमता बढ़ती जाएगी। लेकिन 'विश्व व्यापार संगठन' के गठन ने वैश्विक व्यापार की दिशा बदली। देशों द्वारा अपनी अर्थव्यवस्था को बन्द रखने का युग समाप्त होने लगा। जिन देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था के द्वार नहीं खोले वे वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर अपनी पहचान बनाने में पिछड़ने लगे। समय की नब्ज को पहचानते हुए भारत सरकार ने 1991 ई0 में उदारीकरण के मार्ग पर चलने का संकल्प प्रकट किया। 1991 से 2011 के दशक पर यदि हम दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है भारत के विदेश व्यापार और निवेश की दृष्टि से यह दशक महत्त्वपूर्ण रहा। भारतीय अर्थव्यवस्था गति पकड़ने लगी।

वर्ष 1950–51 में भारत के आयात–निर्यात में मात्र 2 करोड़ रूपए का ऋणात्मक अन्तर था। लेकिन आयात–निर्यात में उदारीकरण की नीति अपनाए जाने के बाद वृद्धि हुई। 1990–1991 ई0 में भारत का निर्यात जहाँ 32553 करोड़ रूपए था, वहीं 2001 में यह बढ़कर 203571 करोड़ रूपए हो गए। दूसरी ओर 1990–91 में जहाँ भारत का आयात 43198 करोड़ रूपए था, वहीं यह 2000–2001 में बढ़कर 230473 करोड़ रूपए हो गया। यह क्रम उदारीकरण की नीत अपनाए जाने के बाद से निरंतर जारी है। 2017–18 में भारत का निर्यात 1142649 करोड़ रूपए और निर्यात 1683467 करोड़ रूपए हो गया। यद्यपि आयात–निर्यात में निरंतर वृद्धि हो रही है किन्तु व्यापार–सन्तुलन भी निरंतर ऋणात्मक रूप से बढ़ रहा है। देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान करने के लिए व्यापार संतुलन

को पक्ष में करना आवश्यक है। 21वीं सदी की शुरूआत में लगभग विश्व के तमाम देश आर्थिक मंदी से ग्रस्त रहे, फिर भी भारत में विकास दर में अपनी निरंतरता बनाए रखी। जहाँ तक भारत आसियान देशों का सम्बन्ध है, दोनों देशों के व्यापारिक रिश्तों में 2012–13 से 2017–18 के दौरान लगभग स्थिरता रही। 2012–13 में भारत का आसियान देशों से आयात भारत के कुल आयात का 7. 3 प्रतिशत था जो 2017–18 में 8.3 प्रतिशत रहा। भारत में आसियान देशों से वर्ष 2012–13 में आयात 48185.8 करोड़ तथा 2017–18 तक बढ़कर 139439.0 करोड़ हो गया।

भारत द्वारा आसियान देशों को निर्यात वृद्धि की गति अत्यंत मंद रही। सन् 2012–13 में भारत के कुल निर्यात में आसियान देशों को निर्यात जहाँ 10. 1 प्रतिशत था, वहीं सन् 2017–18 में यह 10.9 प्रतिशत रहा। पिछले 5–6 वर्षों से आसियान देशों को निर्यात का हिस्सा औसत 10.3 प्रतिशत रहा। 2017–18 में भारत से आसियान देशों को 46094.5 करोड़ रूपए का निर्यात किया गया वहीं वर्ष 2017–18 में यह 124130.3 करोड़ रूपए रहा। पिछले 5–6 वर्षों में आसियान देशों को औसत निर्यात 77572.3 करोड़ रूपए रहा। वर्ष 2016–17 में भारत और आसियान देशों के बीच व्यापारिक गतिविधियों हेतु उपर्युक्त नहीं रहा था। इस वर्ष भारत द्वारा आसियान देशों को निर्यात में –0.7 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गयी। वर्ष 2012–13 में भारत आसियान के बीच व्यापार संतुलन भारत के विपरीत –2091.3 करोड़ रूपए था जबकि वर्ष 2017–18 में यह बढ़कर –15309. 0 करोड़ रूपए हो गया।

यदि आसियान देशों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर दृष्टिपात करें तो आसियान देशों में सर्वाधिक निवेश आकर्षित करने वाला देश सिंगापुर रहा जबकि लाओस इस मामले में भी सबसे पीछे रहा। अवरोही क्रम में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की आसियान देशों में स्थिति इस प्रकार रही– सिंगापुर (16,808.9), वियतनाम (7600.0), थाईलैण्ड (4975.6), इण्डोनेशिया (4876.8), फिलीपीन्स (1938.0), मलेशिया (1381.0), म्यांमार (578.6, कम्बोडिया (530.2)), ब्रुनेई (369.7), लाओस (318.6)।

भारत के क्षेत्रवार बहुपक्षीय व्यापार के तहत आयात की स्थिति की समीक्षा करने पर यह बात स्पष्ट होती है कि अवनिर्दिष्ट क्षेत्र को छोड़कर वर्ष 2012–13 में सर्वाधिक आयात यूरोपीय संघ के देशों से किया गया जो कि 115103.2 करोड़ रू0 था। इसके बाद सर्वाधिक आयात पश्चिमी एशियाई देशों से किया गया। इसके पश्चात् सर्वाधिक 48185.8 करोड़ रू0 का आयात आसियान देशों से किया गया जो कि भारत के कुल आयात का 7.30 प्रतिशत था। पिछले 5–6 वर्षों में क्षेत्र व आयात की स्थिति में आसियान की स्थिति में थोड़ी प्रगति हुई

है जबकि पश्चिमी एशियाई राष्ट्रों से आयात में तीव्र हुई है। 2017–18 में भारत के कुल आयात में आसियान क्षेत्र का आयात 139439 करोड़ रू0 किया गया जो कि कुल आयात का 8.28 प्रतिशत है। जबकि इसी वर्ष पश्चिमी एशियाई राष्ट्रों से 480859 करोड़ रू0 का आयात किया गया जो कि कुल आयात का सर्वाधिक 28.55 प्रतिशत है।

पश्चिमी एशियाई राष्ट्रों से आयात में तीव्र वृद्धि का कारण पेट्रोलियम पदार्थ है। जिनकी पूर्त्ति इन्हीं देशों के द्वारा काफी मात्रा में की जाती है। भारत के क्षेत्रवार आयात की स्थिति में उत्तर–पूर्वी एशियाई राष्ट्र की स्थिति में भी परिवर्तन हुई है। वर्ष 2012–13 में जहाँ इन पूर्वी राष्ट्रों से 102454.6 करोड़ रू0 का आयात हुआ जो कि भारत के कुल आयात का 15.51 प्रतिशत भाग है जबकि 2017–18 में इन राष्ट्रों से कुल आयात बढ़कर 346632 करोड़ रू0 हो गया जो कि कुल भारतीय आयात का 20.58 प्रतिशत है।

भारत और आसियान देशों की बहुपक्षीय व्यापारिक प्रवृत्ति का विश्लेषणः–भारत और आसियान देशों के सेवा क्षेत्र के व्यापार के रूख को दर्शाती है। इण्टरनेशनल ट्रेड स्टेटिक्स के आँकड़ों पर गौर करें तो 2007 में आसियान के अन्य देशों की तुलना में भारत का सेवा क्षेत्र का निर्यात 8926 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। जबकि इसी वर्ष सिंगापुर का सेवा क्षेत्र का निर्यात 25740 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। वर्ष 2018 में भारत का सेवा क्षेत्र का निर्यात बढ़कर 102648 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया जो कि अन्य आसियान देशों की तुलना में काफी अधिक था इसी वर्ष आसियान देशों में सर्वाधिक सिंगापुर का निर्यात 82934 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। इस प्रकार स्पष्ट है कि आसियान के अन्य देशों की तुलना में भारत के सेवा क्षेत्र के निर्यात में तीव्र वृद्धि हुई है। इसी प्रकार आयात की स्थिति देखें तो वर्ष 1997 में सेवा क्षेत्र में सर्वाधिक आयात भी सिंगापुर के द्वारा किया गया जो कि 22245 मिलियन अमेरिकी डॉलर था। इसी वर्ष भारत का सेवा क्षेत्र का आयात 12277 मिलियन अमेरिकी डॉलर था।

वर्ष 2018 तक भारत के सेवा क्षेत्र के आयात में आसियान के अन्य देशों की तुलना में अधिक वृद्धि हुई और इस वर्ष सेवा क्षेत्र में आसियान के अन्य देशों की तुलना में भारत का सेवा व्यापार क्षेत्र सन्तुलन में था जब कि आसियान के अन्य कई देश असन्तुलन की स्थिति में थे। इस प्रकार हाल के वर्षों में कम्बोडिया, लाओस, मलेशिया और फिलीपीन्स के मामले में सेवा क्षेत्र का व्यापार–सन्तुलन सकारात्मक हो गया, लेकिन इण्डोनेशिया, सिंगापुर, थाईलैण्ड, वियतनाम के मामले में यह अब भी नकारात्मक ही है। पिछले कई वर्षों में भारत ने अपने सेवा क्षेत्र का व्यापार–सन्तुलन अपने पक्ष में करने में कामयाब रहा है, जो इस बात का

संकेत है कि इस क्षेत्र में भारत के लिए महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध हो रहे हैं, अर्थात् सेवा क्षेत्र में मौजूदा सम्भावनाओं से अच्छा पारस्परिक लाभ प्राप्त हो सकता है। भारत यदि सिंगापुर और मलेशिया से परिवहन की सेवायें आयात कर सकता है तो आसियान के देश भारत से दूसरी व्यावसायिक सेवायें जैसे कि आईटी क्षेत्र की सेवायें, पेशेवर सेवायें एवं चिकित्सा सेवायें आदि आयात कर सकते हैं। लेकिन क्या भारत और आसियान देश एफ0 टी0 ए0 पर वार्ताओं के दौरान मित्र साझेदार की तरह व्यापार करते हैं। इस सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि शायद ऐसा नहीं है, फिर भी इस क्षेत्र में उम्मीद की किरण तो दिखाई देती ही है।

निष्कर्ष–बहुपक्षीय व्यापार के विश्लेषणात्मक अध्ययन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत का विदेशी व्यापार प्रतिकूल प्रभाव वाला है। अभिप्राय यह कि आयात की अपेक्षा निर्यात कम होता है। भारतीय विदेशी व्यापार कुछ ही वस्तुओं के इर्द–गिर्द केन्द्रित है। निर्यात की दृष्टि से कच्चे माल, भोज्य सामग्री तथा पशुओं के सम्बन्धित सामान विशेष महत्व रखते हैं। कच्चे माल के अतिरिक्त बहुत से अपने कारखानों से निर्मित माल (Manufactured Goods) भी निर्यात किए जाते हैं, जैसे, रासायनिक सामान, वस्त्र, रेडीमेड वस्त्र, चाय, कहवा आदि। उपर्युक्त सामानों का विदेशी व्यापार में लगभग 80 प्रतिशत स्थान है। निर्यात की तरह आयात में भी कुछ प्रमुख वस्तुएँ निहित हैं जैसे– मशीनरी, यातायात उपकरण, रासायनिक पदार्थ आदि। कुल आयात में इनका प्रमुख भाग होता है।

बहुपक्षीय व्यापार की एक अन्य प्रमुख विशेषता यह भी है कि अधिकांश भारतीय व्यापार कुछ ही देशों के साथ होता है। यूरोपीय देशों तथा संयुक्त राज्य अमेरिका से ही अधिकांश व्यापार होता है। एशियाई एवं अफ्रीका देशों के साथ भी व्यापार बढ़ रहा है किन्तु पश्चिमी देशों की अपेक्षा अभी बहुत कम है।

संदर्भ स्रोतः–

1. डॉ. परमानन्द, 1988, पॉलिटिकल डेव्लपमेंट इन साउथ एशिया, स्टर्लिंग नई दिल्ली, पृ. 387
2. डॉ. कृष्ण गोपाल, 1996, जियोपॉलिटिकल्स रिलेशन एण्ड रीजनल को–ऑपेरेशन– ए स्टडी ऑफ सार्क, ट्रांस एशिया नई दिल्ली, पृ 294
3. सीव्हर एण्ड हेली लैण्ड, आर्गेनाईजिंग फार पीस, न्यूयार्क 1985, पृ. 169
4. एम. ब्रेसर, 1995, इंटरनेशनल रिलेशन्स एण्ड एशियन स्टडी–वर्ल्ड पॉलीटिक्स, पृ. 358
5. गाँधी जी रॉय, 1994, अंतराष्ट्रीय राजनीति, ज्ञानदा पटना, पृ. 467
6. टी. राठौर, 1997, दक्षेस सम्मेलनों का विश्लेषनात्मक अध्ययन, जबलपुर, पृ. 327